http://www.developindiagroup.co.in/

# बी.पी.एस.सी.

## 64वीं बिहार राज्य सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा

*पूर्णतः अद्यतन एवं संशोधित अध्ययन सामग्री*

# सामान्य अध्ययन

(भाग – 1)

Prepared by
Develop India Group

https://www.developindiagroup.co.in/

**PUBLISHED BY**

**Develop India Group**

Allahabad (U.P.), India
email : subscriptiondevelopindia@gmail.com
Website : https://developindiagroup.co.in/

**Edition : 2019**

## Develop India Group Aims

We conduct Study Material Programme, All India Correspondence Courses, Test Series Programmes for various competitive exams. All things prepared by our expert faculties. Our aims to provide quality of comprehensive materials in a single place at your home according to your requirement.

## Notes Prepared by

All study notes of DEVELOP INDIA GROUP prepared by our expert team and revised time to time. We have published these notes with carefully, but we can't take gaurantee for human as well as printing mistakes. If you want to give your feedback you can write us email : **subscriptiondevelopindia@gmail.com**

## Terms & Conditions

If you want to buy any kind of study materials/previous year question papers, you can contact us.

## Privacy Policy & Copywrite

All matter compile in this notes from various sources believed to be reliable. We published very carefully to this matter, its authors can not take guarantee the occuracy or completeness of any information published herein and neither Develop India Media Group nor its authors shall be responsible for any errors, omissions or damage arising out of use of this information.

No part of this notes may be reproduce or transemitted without the written permission of the publisher.

@ All right reserved. Refund is not available.

**Note :** All disputes will respect to this publication shall be subject to jurisdiction of the courts, tribunals and forums of Allahabad, India.

**CORPORATE OFFICE**

**Develop India Media Group**

Allahabad (U.P.); India
**emails :** subscriptiondevelopindia@gmail.com,
developindiamediagroup@gmail.com
**Website :** https://developindiagroup.co.in/

## अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| अद्यतन समसामयिक घटनाएं (अलग पुस्तिका देखें) | |
| भारतीय इतिहास एवं संस्कृति | 4–137 |
| भारतीय राजव्यवस्था | 138–191 |
| भारतीय अर्थव्यवस्था | 192–258 |
| भारत एवं विश्व का भूगोल | 259–357 |
| पर्यावरण पारिस्थितिकी, जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन पर सामान्य मुद्दे | 358–420 |
| सामान्य विज्ञान | 421–509 |


Develop India Group

# भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

प्राचीन भारत के अध्ययन हेतु पुरातात्विक स्रोतों का विशेष महत्त्व माना जाता है। इन स्रोतों से भारतीय इतिहास के अनेक अंध–युगों पर प्रकाश पड़ता है। पुरातात्विक स्रोतों के तीन प्रकार स्वीकार किए जाते हैं – (1) अभिलेख, (2) मुद्रा, (3) स्मारक।

1. **अभिलेख :** पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत अभिलेख को स्वीकार किया जाता है। इन अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक स्रोतों से अधिक माना जाता है। अभिलेख अधिकतर पत्थर या धातु की चादरों पर खुदे मिले हैं।
   - सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोघजकोई में प्राप्त हुए हैं। यह लगभग 1400 ई.पू. के हैं तथा इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
   - भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के माने जाते हैं। इन अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
   - अशोक के उपरांत अभिलेखों को हम दो वर्गों में बांट कर देख सकते हैं – सरकारी अभिलेख एवं निजी अभिलेख। सरकारी अभिलेखों में राजकवियों की प्रशस्तियां एवं भूमि अनुदान पत्रों को शामिल किया जाता है।
   - प्रशस्ति का प्रमुख उदाहरण समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति को माना जाता है। इस प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूरा विवेचन मिलता है। उसी प्रकार राजा भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में इस शासक की उपलब्धियों का विवेचन मिलता है।
   - इस प्रकार के अन्य उदाहरण कलिंगराज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, रुद्रदामा का गिरनार अभिलेख, गौतमीबलश्री का नासिक अभिलेख आदि। भूमि अनुदान–पत्रों को अधिकतर तांबे की चादरों पर अंकित किया जाता था।
   - इन अनुदान पत्रों में भूमिखंडों की सीमाओं के उल्लेख के साथ–साथ उस अवसर का वर्णन मिलता है, जब वह भूमिखंड दान दिया जाता था। इन अनुदान–पत्रों में शासकों की उपलब्धियों का भी वर्णन मिलता है।
   - निजी अभिलेख अधिकतर मंदिरों या मूर्तियों पर अंकित किए जाते थे। इस प्रकार के अभिलेखों से मूर्तिकला और वास्तुकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है और तत्कालीन धार्मिक दशा की जानकारी प्राप्त होती है।
   - इन अभिलेखों से भाषाओं के विकास की जानकारी भी प्राप्त होती है। इनसे तत्कालीन राजनीतिक दशा पर भी प्रकाश पड़ता है।
2. **सिक्के :** पुरातात्विक स्रोतों में मुद्राओं या सिक्कों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है। भारत के अधिकतर शासकों ने अपने सिक्के प्रचुर मात्रा में ढलवाए थे, जिनसे उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि दशाओं पर प्रकाश पड़ता है।
   - भारत के प्राचीनतम सिक्कों को 'आहत–सिक्के' कहा जाता है, इन पर विभिन्न प्रकार के चिन्ह पाए जाते हैं, परंतु उन पर कोई लेख प्राप्त नहीं होता है।
   - इन्हीं सिक्कों को साहित्य में 'कार्षापण', 'धरण', 'शतमान' आदि कहा गया है। इन सिक्कों को शासकों के अतिरिक्त व्यापारी, निगम, श्रेणियां आदि भी ढलवाते थे। सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखवाने का कार्य यवन शासकों के द्वारा किया गया।
   - इन सिक्कों पर शासकों की आकृति भी अंकित की जाने लगी, जिससे राजनीतिक इतिहास को जानने में सहायता मिलती है। मौर्योत्तर काल की अधिकतर जानकारी सिक्कों से ही प्राप्त होती है।
   - उसी प्रकार गुप्त सम्राटों के द्वारा विभिन्न प्रकार के सिक्के ढलवाए गए थे। गुप्तोत्तर काल में सिक्कों की मात्रा कम पाई जाती है। मुद्राओं या सिक्कों से तत्कालीन आर्थिक दशा एवं सम्बंधित राजाओं के साम्राज्य की सीमाओं का भी पता चलता है।
   - किसी काल में सिक्कों की बहुलता देखकर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उस काल का व्यापार–वाणिज्य उन्नत दशा में होगा। उसी प्रकार सिक्कों की कमी व्यापार–वाणिज्य की अवनति का सूचक माना जाता है। प्राचीन भारत में गणराज्यों का अस्तित्व मुद्राओं से ही पता चलता है, जैसे – मालव, यौधेय, पांचाल आदि।
3. **स्मारक :** इस स्रोत के अंतर्गत प्राचीन इमारतों, मंदिरों, मूर्तियों आदि को शामिल किया जाता है। इन सभी के द्वारा विभिन्न युगों की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का पता चलता है।
   - मंदिरों, विहारों तथा स्तूपों से जनता की धार्मिक दशा का वर्णन मिलता है। उसी प्रकार हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो जैसे नगरों के उत्खनन से सैंधव सभ्यता का पता चलता है।
   - अतरंजीखेड़ा नामक स्थल की खुदाई से पता चलता है कि देश

Develop India Group

में लोहे का प्रयोग ई.पू. 1000 के आसपास आरम्भ हो गया था। दक्षिण भारत के कई स्थानों की खुदाई से विदेशों से व्यापार का पता चलता है जैसे अरिकौमेडु नामक स्थान की खुदाई से रोम के साथ व्यापार का पता चलता है। उसी प्रकार प्राचीन काल में कुषाणों, गुप्त शासकों और गुप्तोत्तर काल में जो मूर्तियां बनाई गई थी उनसे जनसाधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है।

- कुषाण काल की मूर्तिकला पर विदेशी प्रभाव अधिक दिखाई देता है। उसी प्रकार गुप्तकाल की मूर्तिकला में अंतरात्मा और मुखाकृति में जो सामंजस्य है, वह अन्य किसी काल में नहीं मिलता है।
- भारहूत, बोधगया, सांची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।
- उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पुरातात्विक स्रोतों की सहायता से प्राचीन भारत के इतिहास को तर्कसंगत रूप से समझा जा सकता है।

### *साहित्यिक स्रोत*

इतिहास निर्माण में साहित्यिक स्रोतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है इन्हें इनके लेखन उद्देश्यों व प्रमुखताओं के आधार पर धार्मिक साहित्य व लौकिक साहित्य में विभाजित किया जाता है।

**1. धार्मिक साहित्य :** प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत के रूप में उपयोगी धार्मिक साहित्यों में ब्राह्मण धर्मग्रंथ, बौद्ध ग्रंथ तथा जैन धर्म ग्रंथ आते हैं। ब्राह्मण धर्म ग्रंथ में वैदिक व वैदिकेत्तर साहित्य तथा अन्य साहित्य आते हैं।

- पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में अभिलेख को स्वीकार किया जाता है। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण किए गए हैं।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से लगभग 1400 ई.पू. में मिले हैं। इस अभिलेख में इंद्र, मित्र, वरूण और नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो लगभग 300 ई. पू. के हैं।
- मास्की, गुज्जर्रा, निट्टूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। केवल उत्तर–पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
- लघमान एवं शरेकुना से प्राप्त अशोक के अभिलेख यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में हैं। इस प्रकार अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में मिले हैं।
- प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गए किंतु गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में लिखे गए।
- कुछ गैर–सरकारी अभिलेख जैसे यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुण स्तम्भ लेख, जिसमें द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिलते हैं।
- भारत में सबसे अधिक अभिलेख मैसूर में मिले हैं।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।
- सिक्के के अध्ययन को 'मुद्राशास्त्र' कहते हैं। पुराने प्राचीन काल में सिक्के अधिकतर तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- पकाई मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के मिलते हैं। इनमें से अधिकांश सांचे कुषाण काल के पाए गए हैं।
- आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं जो ई.पू. पांचवीं सदी के हैं। इनको ठप्पा मारकर बनाया जाता था। आहत मुद्राओं की सबसे पुरानी निधियां (होर्ड्स) पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध में मिली हैं।
- आरम्भिक सिक्के अधिकतर चांदी के होते थे जबकि तांबे के सिक्के बहुत कम मात्रा में होते थे। ये सिक्के 'पंचमार्क सिक्के' कहलाते थे। क्योंकि इन सिक्कों पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि आकृतियां बनी होती थी।
- प्राचीन काल में सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं जो विशेषतः सीसे, चांदी, तांबा व सोने के हैं। सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किए। सर्वप्रथम लेख वाले स्वर्ण सिक्के हिन्द–यूनानी (इंडो–ग्रीक) शासकों ने चलाए।
- कुषाण कालीन गांधार कला पर विदेशी प्रभाव दिखायी देता है जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी मानी जाती है।
- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्ति कला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।

**स्मारक एवं भवन**

- उत्तर भारत के मंदिर 'नागर शैली', में दक्षिण भारत के 'द्राविड़ शैली' में तथा मध्य भारत के मंदिर 'वेसर शैली' में बनाए जाते थे।
- दक्षिण पूर्व एशिया व मध्य एशिया से प्राप्त मंदिरों तथा स्तूपों से भारतीय संस्कृति के विदेशों में प्रसार पर प्रकाश पड़ता है।

**चित्रकला**

- अजंता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती

Develop India Group